अध्याय पंचम

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय-पंचम

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 परिचय

राष्ट्र की उन्नति अनेक घटकों पर निर्भर करती है। इन घटकों में शिक्षा का अपना विशेष महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसीकारण शिक्षा उद्देशपरक और उपयोगी होना आवश्यक होती है तथा समयानुसार उसमें परिवर्तन आवश्यक होता है।

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। बालक के सर्वांगीण विकास में भाषा का स्थान महत्वपूर्ण है। यही कारण है की राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शिक्षा में गुणवत्ता का स्तर बढ़ाने के लिए न्यूनतम अधिगम स्तर के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयों में बच्चे भाषा संबंधी खासकर मातृभाषा के साथ–साथ हिन्दी भाषा में भी उपलब्धि को प्राप्त करने पर विशेष बल दिया है।

हिन्दी हमारी राजभाषा है। मातृभाषा के साथ–साथ इस भाषा का ज्ञान जरूरी है। यही कारण है की समूचे भारत में अध्ययन–अध्यापन में इसका समावेश किया गया है फिर भी हिन्दी भाषी क्षेत्रों की तुलना में अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में शोधकर्ता को हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में बच्चों से लेकर सभी प्रकार के आयुस्तर के व्यक्तियों को हिन्दी का उचित प्रयोग करने में कठिनाई दृष्टिगत हुई।

प्रस्तुत अध्ययन में कक्षा 6 के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषाज्ञान का पता लगाने का प्रयास किया गया। पाठ्यक्रम में भाषा का महत्व सर्वोपरी है वह अपने आप में अध्ययन का स्वतंत्र विषय तो है ही उसके साथ–साथ समस्त ज्ञान का वाहक भी है। ऐसा पाया जाता है की प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थी हिन्दी भाषा से सम्बन्धित कई त्रुटिया करते है।

इसी संदर्भ में इस शोध की आवश्यकता अनुभव की गई।

5.2 संक्षेपिका :

संपूर्ण लघुशोध प्रबंध को पांच अध्यायों में विभक्त किया गया हैं अध्यायवार संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है।

5.2.1 प्रथम अध्याय में हिन्दी भाषा शिक्ष्ज्ञण की भूमिका, द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी का महत्व, प्रारंभिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण हिन्दी भाषा अध्ययन का उद्देश्य, अध्ययन की आवश्यकता, अध्ययन के उद्देश्य, शून्य परिकल्पनाऐं, शोध में प्रयुक्त चर तथा शोध की परिसीमाऐं की जानकारी दी गई है।

शोध का शिर्षक :

''कक्षा 6 के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उपलब्धियों का अध्ययन''

शोध के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध के निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये है :

1. कक्षा 6 के बालक–बालिकाओं की हिन्दी भाषा की उपलब्धि में अंतर ज्ञात करना।
2. कक्षा 6 के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा की उपलब्धि में अन्तर ज्ञात करना।
3. हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाई वाले बिन्दुओं (व्यवहारिक व्याकरण) को ज्ञात करना।
4. कक्षा 6 के विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी भाषा से संबंधित त्रुटियों को दूर करने के लिए उचित सुझाव देना।

<u>परिकल्पनाऐं :–</u>

1. कक्षा 6 के बालक–बालिकाओं की हिन्दी भाषा की उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. कक्षा 6 के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा की उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध में प्रयुक्त चर :

विश्लेषण की सुविधा के अनुसार चरों को निम्न भागों में वर्गीकृत किया गया है।

स्वतंत्र चर :

कक्षा 6 के बालक एवं बालिकाऐं, ग्रामीण एवं शहरी।

आश्रित चर :

कक्षा 6 के विद्यार्थियों का हिन्दी भाषा का उपलब्धि परीक्षण।

शोध की परिसीमाऐं :

शोध समस्या को निम्न सीमाओं तक केन्द्रीत रखा गया है।

1. अध्ययन हेतु महाराष्ट्र राज्य को ही लिया गया है।
2. महाराष्ट्र के वर्धा जिले के प्राथमिक शालाओं को अध्ययन में शामिल किया गया है।
3. अध्ययन हेतु वर्धा जिले को दस प्राथमिक शालाओं में से कक्षा 6 के 200 विद्यार्थियों को ही लिया गया है।
4. इसमें दस प्राथमिक शालाओं में से 5 ग्रामीण क्षेत्र तथा 5 शहरी क्षेत्र की शालाओं को ही शामिल किया गया है।

तालिका क्रमांक 5.1

<u>प्रदत्तों का विश्लेषण</u>

परिकल्पना क्रमांक	तालिका क्रमांक	प्रयुक्त सांख्यिकी	प्राप्त परिणाम	प्राप्त निष्कर्ष
1.	4.1	'टी' अनुपात	3.58	सार्थक
2.	4.2	'टी' अनुपात	1.26	असार्थक

5.3 निष्कर्ष एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी का उपयोग करते हुए न्यादर्श के प्रदत्तों के संकलन एवं विश्लेषण करने के पश्चात निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये गये है –

1. हिन्दी भाषा उपलब्धि में लिंग का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
2. हिन्दी भाषा के घटक शब्दज्ञान तथा लेखन में लिंग का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
3. वाक्यरचना एवं व्याकरण का लिंग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
4. लिंग का शब्दज्ञान के उपघटक समानार्थी शब्द, अशुद्ध शब्द पर प्रभाव पड़ता है पर विरोधी शब्द एवं शब्द समूह पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
5. वाक्यरचना के उपघटक शब्द से वाक्य पर लिंग का सार्थक प्रभाव पड़ता है पर लिंग का मुहावरे पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
6. लिंग का स्त्रीलिंग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता लेकिन बहुवचन पर लिंग का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
7. लिंग का अनुवाद लेखन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता लेकिन लिंग का निबंध लेखन पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
8. हिन्दी भाषा उपलब्धि के घ्झटक शब्दज्ञान, वाक्यरचना, व्याकरण, लेखन का ग्रामीण एवं शहरी बालकों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
9. समानार्थी शब्द तथा शब्दसमूह का ग्रामीण एवं शहरी बालकों पर प्रभाव पड़ता है।
10. विरोधी शब्द एवं अशुद्ध शब्द का ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
11. शब्दसे वाक्य बनाने का ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता लेकिन मुहावरों का वाक्य में प्रयाग का ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों पर प्रभाव पड़ता है।

12. स्त्रीलिंग का ग्रामीण एवं शहरी बालकों पर सार्थक प्रभाव पड़ता है लेकिन बहुवचन का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

13. अनुवाद लेखन तथा निबंध लेखन का ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

5.4 सुझाव :

1. स्कूल में हिन्दी भाषा से सम्बन्धित विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाये जैसे वाद–विवाद प्रतियोगिता, वक्तृत्व स्पर्धा, गीत स्पर्धा निबंध लेखन स्पर्धा आदि।

2. स्कूल का वातावरण स्कूल के प्रबंधकों को इस तरह करना चाहिए जिससे विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा के प्रति जिज्ञासा एवं आकर्षण तथा प्रेम बढ़ सके।

3. हिन्दी राष्ट्र भाषा समिति की विविध परीक्षाओं का आयोजन किया जाये।

4. स्कूल में हिन्दी भाषा साहित्य का विशेष पुस्तकालय होना चाहिये।

5. कक्षा स्तर पर हिन्दी शुद्ध लेखन पर विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देना चाहिए।

6. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के बच्चों में हिन्दी भाषा सम्बन्धित सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन करना चाहिए।

7. पाठ्य पुस्तकों में व्याकरण संबंधी अधिक से अधिक उदाहरण व अभ्यास दिए जाऐं ताकि विद्यार्थी स्वयं ही व्यावहारिक व्याकरण से संबंधित अभ्यासों को हल कर सके।

8. कक्षाध्यापकों द्वारा व्यवहारिक व्याकरण के अभ्यासों पर अधिक से अधिक बल दिया जाए।

9. मासिक, त्रेमासिक व छः माही मूल्यांकन में अधिक से अधिक व्यावहारिक व्याकरण से संबंधित प्रश्न पूछे तथा विद्यार्थियों द्वारा की गई त्रुटियों की पहचान कर उचित उपचारात्मक शिक्षण करवाए जाए।

10. शिक्षकों को हिन्दी भाषा पढ़ते समय पाठ्य पुस्तकों के विषय वस्तु पर नहीं बल्कि भाषा के कौशलों पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

11. विद्यार्थियों को इस प्रकार के प्रश्न अभ्यासार्थ देने चाहिए जिससे उनका शब्द भण्डार बढ़े।

12. पाठ पढ़ाते समय मुहावरों के अर्थ समझाना चाहिए तथा साथ ही बोल–चाल की भाषा में प्रयुक्त होने वाले मुहावरों की व्याख्या भी कक्षा में करनी चाहिए।

13. कक्षा में सस्वर वाचन कराना चाहिए।

5.5 भावी शोध हेतु समस्याएँ –

हिन्दी भाषा हमारे देश की राष्ट्र भाषा है। अतः आवश्यक हो जाता है की प्रत्येक नागरिक को हिन्दी भाशा अवगत हो। इस हेतु विविध प्रयास करना आवश्यक है। इस सम्बन्ध में हिन्दी भाषा के विविध पहलु या सोपान पर प्राथमिक शिक्षा स्तर से लेकर उच्च शिक्षा स्तर तक विविध शोध अध्ययन की आवश्यकता है। इस दिशा में शोधकर्ता के अनुसार भावी शोध हेतु महत्वपूर्ण समस्याऐं इस प्रकार है :–

1. माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उपलब्धियों का अध्ययन।

2. केन्द्रीय विद्यालय में हिन्दी भाषा में उपलब्धियों का अध्ययन।

3. हिन्दी भाषी क्षेत्र तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्र के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन।

4. प्राथमिक शिक्षकों हिन्दी भाषा के प्रति अभिरूचि तथा अभिवृत्ति का अध्ययन।

5. डी.एड., बी.एड. तथा एम.एड. छात्रों का हिन्दी भाषा में उपलब्धियों का अध्ययन।